



कालसर्प दोष व निवारण

राहु-केतु की धुरी, दोष है या नहीं, प्रकार व सरल उपाय

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

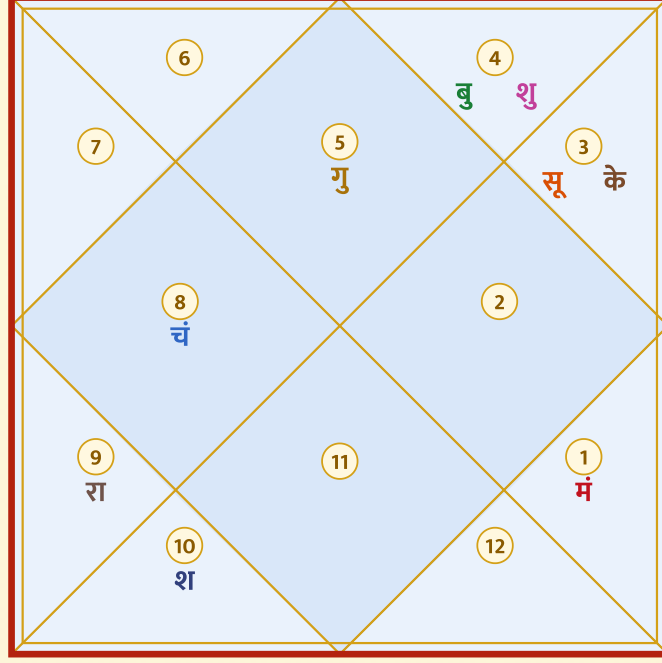
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



आपकी कुंडली में कालसर्प — है या नहीं

अ ध्या य 1

आपकी कुंडली में कालसर्प — है या नहीं

अभय शर्मा जी, यह बात आप पूरे विश्वास के साथ जान लीजिए — **आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है।** यह कोई तसल्ली नहीं, शुद्ध खगोलीय गणना का निष्कर्ष है।

राहु-केतु की धुरी — समझिए पूरा चित्र

आपकी कुंडली में राहु पाँचवें भाव (धनु राशि) में हैं और केतु ग्यारहवें भाव (मिथुन राशि) में। कालसर्प दोष तब माना जाता है जब सातों ग्रह — सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि — **एक साथ इस धुरी के एक ही ओर** सिमट जाएँ, यानी राहु से केतु तक के आधे राशि-चक्र में बंध जाएँ।

राशि-चक्र के ऊपरी स्तर पर देखें तो कुछ ग्रह इस घेरे में दिखते हैं — और यही कारण है कि कई बार बिना अंश जाँचे ज्योतिषी इसे कालसर्प कह देते हैं। किंतु **जब अंशों की सूक्ष्म गणना की जाती है, तो मंगल और शनि धुरी के पार निकल चुके हैं।** शास्त्र का यह नियम स्पष्ट है — यदि एक भी ग्रह धुरी से बाहर हो, तो योग भंग हो जाता है। आपकी कुंडली में दो ग्रह बाहर हैं, इसलिए दोष की कोई गुंजाइश ही नहीं।

राहु-केतु की स्थिति — इनका अपना संदेश

दोष न होने का अर्थ यह नहीं कि राहु-केतु का प्रभाव शून्य है। ये दोनों आपकी कुंडली में **पाँचवें और ग्यारहवें भाव** की धुरी पर बैठे हैं — यह बुद्धि, सृजनशीलता व आकांक्षाओं की धुरी है।

- राहु पाँचवें भाव में हैं — संतान, विद्या, रचनात्मकता और गहरी इच्छाओं का भाव। राहु यहाँ असाधारण सोच और नए रास्ते खोजने की प्रवृत्ति देते हैं, पर मन को बेचैन भी रख सकते हैं।
- केतु ग्यारहवें भाव में हैं — लाभ और सामाजिक संबंधों का भाव। केतु यहाँ बड़े समूहों से कुछ अलगाव, पर भीतरी स्वतंत्रता और आध्यात्मिक रुझान देते हैं।

सूर्य पर ग्रहण दोष अवश्य है — आपकी कुंडली में केतु का प्रभाव सूर्य पर पड़ता है, जिससे आत्मविश्वास और पिता-पक्ष में कभी-कभी उलझन आती है। यह कालसर्प नहीं, पर ध्यान देने योग्य है।

अन्य ज्योतिषियों की बात से भ्रम क्यों होता है

अक्सर जब राशि-चक्र पर नज़र डालें तो अधिकांश ग्रह राहु-केतु के बीच दिखते हैं — और बिना अंश-गणना के यह स्थिति कालसर्प जैसी लगती है। **किंतु सटीक अंशों की गणना यही सत्य उजागर करती है कि यह योग पूर्ण रूप से भंग है।** शास्त्र में भी कहा गया है कि अंश-शुद्धि के बिना दोष का निर्धारण करना उचित नहीं।

मुख्य बातें

- **कालसर्प दोष नहीं है** — मंगल और शनि अंशों की गणना से धुरी के पार हैं, योग भंग है
- राहु पाँचवें भाव में और केतु ग्यारहवें भाव में — यह धुरी बुद्धि व आकांक्षाओं को विशेष रंग देती है
- राहु-केतु का प्रभाव अपनी जगह है, किंतु वह दोष नहीं — **प्रवृत्ति और दिशा का संकेत है**
- सूर्य पर ग्रहण का प्रभाव है, उसके उपाय लाभकारी रहेंगे
- किसी ने कालसर्प कहकर भय दिखाया हो तो वह भय अब छोड़ दीजिए — आप मुक्त हैं



राहु-केतु की धुरी व ग्रहों की स्थिति

अ ध्या य 2

राहु-केतु की धुरी व ग्रहों की स्थिति

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में राहु-केतु की धुरी पाँचवें और ग्यारहवें भाव पर है — यह धुरी आपके जीवन की सबसे गहरी कहानी कहती है: संतान-बुद्धि-रचना बनाम लाभ-इच्छापूर्ति। और इस धुरी के एक ओर पाँच ग्रह हैं, दूसरी ओर दो — पर दोष नहीं, क्योंकि मंगल और शनि अंश की गणना से घेरे के पार निकल चुके हैं।

राहु पाँचवें भाव में — रचना और बुद्धि की तीव्र भूख

राहु धनु राशि के पाँचवें भाव में है। पाँचवाँ भाव बुद्धि, रचनात्मकता, संतान और पूर्व-पुण्य का घर है। यहाँ राहु का होना बताता है कि **आपके भीतर कुछ नया गढ़ने, कुछ असाधारण बनाने की एक अतृप्त चाह है** — यह चाह पिछले जन्म से नहीं लाई, यह इस जन्म में सीखनी है। धनु राशि इसे और बड़ा कर देती है — बड़े सपने, बड़े लक्ष्य, कभी-कभी यथार्थ से थोड़ा दूर। पाँचवें भाव पर सूर्य की दृष्टि है — आत्मसम्मान और पहचान का सवाल इस चाह से जुड़ा है। साथ में गुरु की दृष्टि भी है — जो इस राहु को कुछ संतुलन देती है, भटकने से बचाती है। **राहु पर गुरु की दृष्टि एक बड़ी राहत है** — बिना इसके यह राहु बहुत अधिक जोखिम उठाने पर उतारू हो सकता था।

केतु ग्यारहवें भाव में — लाभ की विरक्ति

केतु मिथुन राशि के ग्यारहवें भाव में हैं। ग्यारहवाँ भाव लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। केतु यहाँ एक अजीब स्थिति बनाते हैं — **आप जो चाहते हैं वह मिल तो जाता है, पर उसमें वह तृप्ति नहीं होती जिसकी उम्मीद थी।** पैसा आए, मित्र मिलें, लक्ष्य पूरे हों — पर भीतर एक खालीपन रह जाता है। यह केतु का स्वभाव है — जहाँ वे बैठें, वहाँ पकड़ ढीली रहती है। यहाँ सूर्य भी बैठे हैं, और केतु भी — इससे सूर्य-ग्रहण दोष बनता है जो पिता-सुख और आत्मविश्वास में थोड़ी रुकावट देता है। शनि की दृष्टि भी ग्यारहवें पर नहीं पड़ रही — इसलिए लाभ के मामले में अपने श्रम और विवेक पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

धुरी के दोनों ओर के ग्रह — असली चित्र

धुरी के केतु-पार (ग्यारहवें भाव की ओर): सूर्य ग्यारहवें में, केतु के साथ।

धुरी के राहु-पार (पाँचवें भाव की ओर): चंद्र (चौथे), गुरु (पहले), बुध व शुक्र (बारहवें) — ये सब राहु की ओर हैं।

इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि **आपके जीवन की अधिकांश ऊर्जा — मन, बुद्धि, सुख, रिश्ते — राहु वाले हिस्से में लगती है**, यानी रचना, सीखना और भीतरी संसार में। बाहरी लाभ, सामाजिक प्रतिष्ठा और मित्रता (ग्यारहवाँ भाव) कभी-कभी अधूरे-से लगते हैं।

मंगल और शनि इस घेरे से बाहर हैं — **यही इस कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति है।** मंगल नवें भाव में स्वराशि मेष में हैं — भाग्य और साहस का भाव बलवान है। शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — संघर्ष से जूझने और उसे पार करने की ताकत आपके पास है।

मुख्य बातें

- **राहु पाँचवें भाव में (धनु)** — रचना, बुद्धि और असाधारण कुछ गढ़ने की गहरी चाह; गुरु की दृष्टि इसे संतुलित करती है
- **केतु ग्यारहवें भाव में (मिथुन)** — लाभ मिलता है पर तृप्ति कम; बाहरी सफलता में एक आंतरिक विरक्ति बनी रहती है
- **मंगल और शनि घेरे के बाहर** — कालसर्प दोष भंग; इन्हीं से जीवन में साहस और सहनशक्ति आती है
- **सूर्य-केतु की युति** ग्यारहवें में — आत्मविश्वास और पिता-सुख में कभी-कभी कमी महसूस होती है; सूर्य के उपाय हितकर हैं
- **असली काम:** राहु की रचनात्मक भूख को दिशा दीजिए, केतु की विरक्ति को बोझ मत मानिए — यह आपको सतही लक्ष्यों से ऊपर उठाती है



जीवन के किन क्षेत्रों पर असर

अ ध्या य 3

अभय शर्मा जी, राहु-केतु की यह धुरी आपके जीवन के कुछ खास क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ती है — पर यह छाप किसी दोष की नहीं, एक विशेष दिशा की है। आइए देखते हैं कि कौन-से क्षेत्र इससे सीधे जुड़े हैं।

संतान, बुद्धि और रचनात्मकता — पाँचवाँ भाव

राहु आपके पाँचवें भाव (धनु राशि) में बैठे हैं — और यह भाव संतान, बुद्धि, विद्या और रचनात्मकता का है। इसका सीधा अर्थ है कि **इन विषयों में आपकी सोच सामान्य से हटकर, थोड़ी अलग और बड़े दायरे की होती है।** आप जो भी बनाते हैं — चाहे विचार हो, योजना हो या कोई काम — उसमें एक असाधारण कोण होता है।

संतान के संदर्भ में — पाँचवें भाव के स्वामी गुरु हैं, जो आपके लग्न (पहले भाव) में सिंह राशि में बैठे हैं और उनकी अवस्था युवा है, बल भरपूर है। इसका अर्थ यह है कि संतान-सुख में देरी हो सकती है, पर निराशा नहीं। **गुरु की दृष्टि सीधे पाँचवें भाव पर है — यह बड़ी राहत की बात है।** साथ ही सूर्य भी पाँचवें भाव को देख रहे हैं (ग्यारहवें भाव से)। राहु की मौजूदगी से मन में "अब होगा या नहीं" जैसी बेचैनी बनती है — पर गुरु का यह बल उस बेचैनी को अंततः शांत करता है।

लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति — ग्यारहवाँ भाव

केतु आपके ग्यारहवें भाव (मिथुन राशि) में हैं — और यहाँ सूर्य भी बैठे हैं। **यह स्थिति कहती है कि लाभ आता है, पर उससे मन पूरी तरह नहीं भरता।** बड़े लक्ष्य पाने के बाद भी एक खालीपन बना रहता है — "इससे भी बड़ा चाहिए" या "यह तो मिल गया, पर असली तो कुछ और है।" यह केतु का स्वभाव है — वह जहाँ बैठता है, वहाँ की चीजें मिलती हैं पर मन नहीं लगता।

ग्यारहवें भाव के स्वामी बुध हैं, जो बारहवें भाव में शत्रु राशि में बैठे हैं। इससे **मित्रों या सामाजिक दायरे से अपेक्षित लाभ कभी-कभी अटकता है।** पर केतु यहाँ एक और बात देता है — जो लाभ आता है, वह अक्सर किसी असाधारण या अप्रत्याशित स्रोत से आता है।

भाग्य और विश्वास — नवाँ भाव

राहु की सीधी दृष्टि नवें भाव पर पड़ती है — और नवाँ भाव भाग्य, धर्म और उच्च शिक्षा का है। इसका अर्थ यह है कि **आपके भाग्य की राह सीधी नहीं — उसमें मोड़ आते हैं, कभी-कभी विश्वास डोलता है।** "क्यों मुझे ही?" जैसे प्रश्न मन में उठते हैं। पर ध्यान दीजिए — नवें भाव में स्वराशि मंगल बैठे हैं, जो इस भाव को बड़ा बल देते हैं। **मंगल का यह स्थान कहता है कि भाग्य का द्वार आपके अपने साहस और परिश्रम से खुलता है — किसी और की कृपा से नहीं।** गुरु की दृष्टि भी नवें पर है, जो इस भाव को और संबल देती है।

सप्तम भाव — जीवनसाथी और साझेदारी

केतु की दृष्टि सातवें भाव पर पड़ती है, और गुरु की दृष्टि भी। सातवें भाव के स्वामी शनि हैं, जो छोटे भाव में अपनी राशि मकर में वक्री बैठे हैं। **इसका अर्थ है कि विवाह और साझेदारी में समझदारी से चलना होगा — रिश्ते में गहराई आती है, पर उसमें थोड़ा समय लगता है।** केतु की दृष्टि यहाँ एक अलगाव का भाव देती है — या तो साथी का स्वभाव थोड़ा अलग होता है, या रिश्ते में कभी-कभी "दूरी" का अनुभव होता है। पर गुरु की दृष्टि इसे सँभालती है।

मुख्य बातें

- **पाँचवाँ भाव (संतान, रचना):** राहु की उपस्थिति से बेचैनी, पर गुरु के बल और दृष्टि से सकारात्मक फल — देरी संभव, निराशा नहीं।
- **ग्यारहवाँ भाव (लाभ, इच्छापूर्ति):** केतु यहाँ लाभ देता है पर मन नहीं भरता — यह प्रवृत्ति पहचानें और भीतर की संतुष्टि खोजें।
- **नवाँ भाव (भाग्य):** राहु की दृष्टि से भाग्य की राह टेढ़ी, पर स्वराशि मंगल और गुरु की दृष्टि से साहस ही असली भाग्य है।
- **सातवाँ भाव (विवाह):** केतु की दृष्टि से रिश्ते में समझ बनाने की ज़रूरत रहती है — पर गुरु की दृष्टि इसे स्थिरता देती है।
- **कुल मिलाकर:** यह धुरी आपको "असाधारण सोच वाला" बनाती है — जो चुनौती भी है और वरदान भी।



कब असर बढ़ता है, कब घटता है

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, राहु-केतु का असर एक जैसा नहीं रहता — कभी यह तेज़ होता है, कभी शांत। आपकी कुंडली के आँकड़ों से यह साफ़ दिखता है कि **किन परिस्थितियों में यह धुरी अधिक सक्रिय होती है और किन में खुद-ब-खुद हल्की पड़ जाती है।**

असर कब बढ़ता है

राहु-केतु की दशा-अंतर्दशा सबसे बड़ा कारण है। आपकी सूर्य महादशा में जो राहु की अंतर्दशा जून 2024 से मई 2025 तक चली — वह एक ऐसा ही दौर था जब पाँचवें भाव का राहु और लग्न पर बैठा गुरु आपस में खिंचाव बनाते हैं। उस समय मन में अचानक मोड़, भ्रम, या सोच से बड़े निर्णय लेने की प्रवृत्ति अधिक रही होगी।

इसके अलावा, **गोचर में राहु या केतु जब जन्म-कुंडली के लग्न, चंद्र राशि (वृश्चिक), या पाँचवें-ग्यारहवें भाव पर आएँ** — तब असर बढ़ता है। अभी केतु सिंह (लग्न) में हैं और राहु कुम्भ (सप्तम) में — यह दिसम्बर 2026 तक रहेगा। **यह समय ऐसा है जब मन बाहर की दुनिया से थोड़ा कटा-सा लग सकता है।** लग्न पर केतु की यह स्थिति आत्मविश्वास और दिशा में अनिश्चितता लाती है — यह दोष नहीं, बस एक संकेत है कि भीतर का काम अधिक करने का वक़्त है।

गुरु जब बारहवें भाव (कर्क) में गोचर करें — जैसा अभी जून 2026 से अक्तूबर 2026 तक हो रहा है — तब भी राहु-केतु का असर थोड़ा अधिक महसूस होता है, क्योंकि बारहवाँ भाव एकांत व अव्यक्त भावनाओं का घर है।

असर कब घटता है

गुरु जब केंद्र या त्रिकोण में शुभ गोचर करें, तब राहु-केतु का प्रभाव स्वतः हल्का हो जाता है। नवम्बर 2026 में गुरु सिंह (लग्न) में आएँगे — और तब आपके जन्मकालीन गुरु जो पहले भाव में बैठे हैं, उन्हें बल मिलेगा। **गजकेसरी योग का असर फिर जागेगा, मन स्थिर होगा और राहु का भ्रम अपने-आप घटने लगेगा।**

इसी तरह, **सूर्य-शनि की यह अंतर्दशा फरवरी 2027 तक** चलती है। शनि आपकी कुंडली में छठे भाव में स्वराशि में हैं — अनुशासन और धैर्य से काम करने पर वे राहु के बिखराव को रोकते हैं। जब जीवन में नियम-कायदे से चलें, तब राहु का असर कम होता है।

आगे का नज़्शा

- **अभी से दिसम्बर 2026** — केतु लग्न पर; भीतर की ओर मुड़ने का समय; बड़े बाहरी निर्णय थोड़े सोच-समझकर लें
- **नवम्बर 2026 के बाद** — गुरु लग्न में आएँगे, असर हल्का होगा
- **फरवरी 2027 से** — बुध की अंतर्दशा; योगिनी में भी भद्रिका (बुध) चल रही है — यह वाणी, बुद्धि और स्पष्टता का समय होगा, राहु का धुंधलापन छूटेगा

मुख्य बातें

- राहु-केतु की दशा-अंतर्दशा और लग्न पर केतु का गोचर — असर बढ़ाने वाले मुख्य कारण
- गुरु जब केंद्र-त्रिकोण में हों — असर सबसे कम; **गजकेसरी योग इसमें आपकी असली ढाल है**
- दिसम्बर 2026 तक सँभलकर चलें; उसके बाद गुरु-बल से स्थिरता बढ़ेगी
- **शनि का अनुशासन और गुरु की शरण — यही इस धुरी को शांत करने का सबसे स्थायी उपाय है**



सरल निवारण — मंत्र, दान व सेवा

अ ध्या य 5

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में कालसर्प दोष है ही नहीं — इसलिए यहाँ किसी भारी कर्मकांड या महँगी पूजा की कोई ज़रूरत नहीं। जो उपाय नीचे दिए हैं, वे आपकी कुंडली के **राहु-केतु की धुरी, सूर्य की मृत अवस्था और चल रही सूर्य-शनि अंतर्दशा** को देखकर चुने गए हैं — ये सब आपके अपने हैं।

राहु को साधना — पाँचवें भाव की उलझन सुलझाना

आपके राहु पाँचवें भाव (संतान, बुद्धि, रचनात्मकता) में हैं। राहु जब यहाँ हों तो मन में बड़े-बड़े सपने उठते हैं, पर ज़मीन पर उतरने में समय लगता है। इसका सबसे सीधा निवारण है — **रोज़ की दिनचर्या में एक काम ऐसा जोड़ें जिसमें पूरा ध्यान लगे, आधा-अधूरा नहीं।**

- **मंत्र:** "ॐ राहवे नमः" — प्रतिदिन प्रातःकाल 108 बार। राहु का समय सूर्यास्त के बाद भी उचित है।
- **दान:** शनिवार को काले तिल, उड़द की दाल या नारियल किसी ज़रूरतमंद को दें — मन में किसी अपेक्षा के बिना।
- **सेवा:** जो लोग समाज के हाशिये पर हैं — मज़दूर, बेसहारा, वृद्ध — उनके लिए महीने में एक बार कुछ करें। राहु की असली शांति सेवा से आती है, मंत्र से नहीं — मंत्र केवल दिशा देता है।

केतु को दिशा देना — ग्यारहवें भाव का वैराग्य

केतु आपके ग्यारहवें भाव (लाभ, इच्छापूर्ति) में हैं। यह स्थिति बताती है कि **लाभ तो मिलेगा, पर मन उससे तृप्त नहीं होगा** — यह केतु का स्वभाव है। इसका उपाय दमन नहीं, दिशा है।

- **रोज़ाना:** दस-पंद्रह मिनट का मौन या ध्यान — बस बैठकर, बिना फ़ोन के। यही केतु का सबसे बड़ा उपाय है।
- **मंत्र:** "ॐ केतवे नमः" — 108 बार, संध्या समय।
- **दान:** मंगलवार या शनिवार को कुत्ते को रोटी दें — यह छोटा पर असरदार उपाय है।
- **सेवा:** किसी आध्यात्मिक स्थान (मंदिर, आश्रम) में सप्ताह में एक बार थोड़ा समय बिताएँ — सेवा के भाव से, दर्शन के नहीं।

सूर्य की मृत अवस्था — आत्मविश्वास को जगाना

यह कुंडली का सबसे ध्यान देने वाला बिंदु है। सूर्य आपके लग्न के स्वामी हैं और अभी सूर्य की महादशा चल रही है — पर षड्बल में उनकी **अवस्था मृत** है। इसका अर्थ यह नहीं कि कुछ बुरा होगा; अर्थ यह है कि सूर्य का फल — आत्मविश्वास, नेतृत्व, पिता का आशीर्वाद — अभी पूरी तरह नहीं खिल रहा।

- **दिनचर्या:** सूर्योदय के आधे घंटे के भीतर उठें और धूप में खड़े होकर दस मिनट गहरी साँस लें — यह सूर्य के साथ चलना है, पूजा नहीं।
- **मंत्र:** "ॐ घृणि सूर्याय नमः" — सुबह जल अर्पित करते हुए 11 बार। **फ़रवरी 2027 तक** यह नियम बनाए रखें — जब तक सूर्य-शनि अंतर्दशा चलती है।
- **व्यवहार:** पिता या किसी बड़े-बुजुर्ग पुरुष से सम्बंध सुधारें — उनसे बात करें, उनकी बात सुनें। सूर्य का सबसे गहरा उपाय यही है।

शनि की अंतर्दशा — धैर्य ही उपाय है

अभी **सूर्य-शनि अंतर्दशा** फ़रवरी 2027 तक चलेगी। शनि आपके छठे भाव में स्वराशि में हैं — बलवान हैं, पर कुमार अवस्था में। इस दौर में जल्दबाज़ी से बचना ही सबसे बड़ा उपाय है।

- **शनिवार का दान:** सरसों का तेल, काला कपड़ा या चप्पल किसी ज़रूरतमंद को दें।
- **सेवा:** मज़दूर वर्ग, सफ़ाईकर्मी या किसी वृद्ध की सेवा — बिना दिखावे के। शनि को यही भाता है।

- **मंत्र:** "ॐ शं शनिश्चराय नमः" — शनिवार को 19 बार पर्याप्त है; हर दिन की आवश्यकता नहीं।

मुख्य बातें

- **कोई भारी कर्मकांड नहीं चाहिए** — दोष है ही नहीं; उपाय केवल ग्रहों की दिशा के अनुसार।
- **सूर्य-मंत्र और सूर्योदय की दिनचर्या** सबसे पहले और सबसे ज़रूरी — महादशा सूर्य की है।
- **राहु की शांति सेवा से आती है**, केतु की मौन से — दोनों रोज़ की छोटी आदत से ही होंगे।
- **फ़रवरी 2027 तक शनि-दान नियमित रखें** — उसके बाद सूर्य-बुध अंतर्दशा में बौद्धिक काम गति पकड़ेगा।
- यह सब करने योग्य है — न महुँगा, न कठिन। बस नियम और निष्ठा चाहिए।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४



संतुलित दृष्टि — घबराने की ज़रूरत नहीं

अ ध्या य 6

अभय शर्मा जी, जो बात सबसे पहले और सबसे साफ़ कहनी है — **आपकी कुंडली में कालसर्प दोष है ही नहीं।** यह न तसल्ली है, न अनुमान — शुद्ध अंश-गणना का निष्कर्ष है।

राहु-केतु हैं, दोष नहीं

बहुत-से लोग राहु-केतु की धुरी देखकर घबरा जाते हैं। पर इन दोनों की उपस्थिति अपने-आप में कोई अभिशाप नहीं है — ये हर कुंडली में होते हैं। **कालसर्प तब बनता है जब सातों ग्रह राहु-केतु के बीच एक ओर बंद हो जाएँ।** आपकी कुंडली में मंगल और शनि अंश की गणना से धुरी के पार निकल चुके हैं — इसलिए यह योग बनता ही नहीं। जो ज्योतिषी राशि-मात्र देखकर यह दोष बता दें, वे अंश की बारीकी नहीं देख रहे।

राहु-केतु की धुरी — बाधा नहीं, दिशा

आपके राहु पाँचवें भाव (बुद्धि, रचना, संतान) में और केतु ग्यारहवें भाव (लाभ, इच्छापूर्ति) में हैं। **यह धुरी संकट की नहीं, सीखने की है।** केतु ग्यारहवें भाव में यह कहता है कि बाहरी लाभ और भीड़ की चाह पर अत्यधिक निर्भरता मन को थकाती है — भीतर की रचनात्मकता और बुद्धि (राहु, पाँचवाँ भाव) ही आपका असली रास्ता है। गुरु लग्न में युवा अवस्था में हैं और उनकी दृष्टि पाँचवें भाव पर पड़ रही है — यह राहु को शुभ दिशा देती है, उसे बिगाड़ती नहीं।

मंगल और शनि — आपकी असली ताकत

मंगल स्वराशि मेष में नवम भाव में हैं — भाग्य और साहस दोनों एक ही स्थान पर। शनि स्वराशि मकर में छठे भाव में वक्री हैं — शत्रु-विजय और कठिन परिस्थितियों में टिके रहने का बल। **इन्हीं दोनों ने कालसर्प का घेरा तोड़ा — और यही आपकी कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति भी है।** हर्ष विपरीत राजयोग इसी शनि से बन रहा है, जो कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति देता है।

मुख्य बातें

- **कालसर्प दोष नहीं है** — यह गणना का निर्णय है, सात्वता नहीं
- राहु-केतु की धुरी रचनात्मकता व लाभ के भावों पर है — यह बाधा नहीं, दिशा है
- **गुरु की दृष्टि राहु पर पड़ रही है** — यह बड़ी राहत की बात है
- मंगल व शनि दोनों स्वराशि में हैं — यही आपकी असली ढाल है
- डर छोड़िए, इस धुरी को समझिए — **34 वर्ष की यह उम्र निर्णय की है, घबराने की नहीं**

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ कालसर्प दोष व निवारण ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।